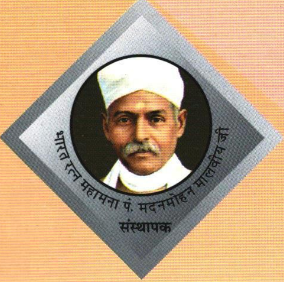

सनातन संवर्धिनी

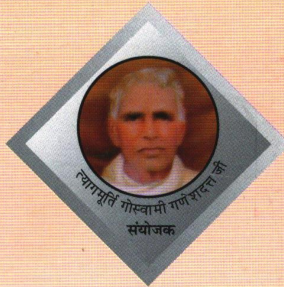

चतुर्थ वर्ष - प्रथम अंक

जून-2018

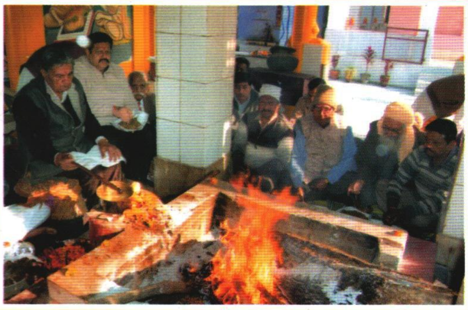

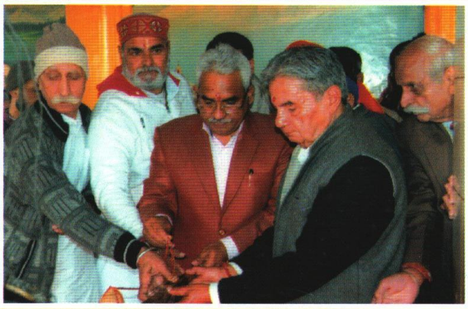

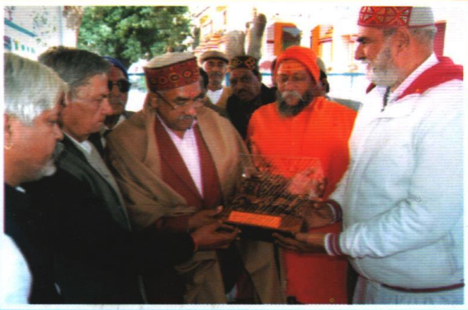

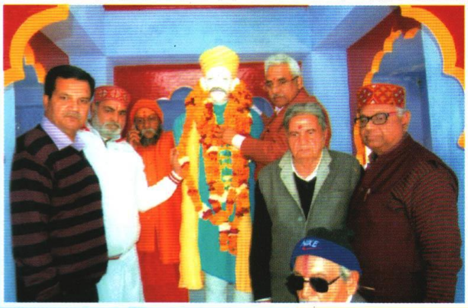

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, (पंजी.) नई दिल्ली

(कार्यक्षेत्र: दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान)
मुख्य कार्यालय: भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष: 011-23586251, 23584016
शाखा कार्यालय: गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैक्टर-19 ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाष: 0172-2543283
सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार: 01334-261702

E-mail: sdprsabha@gmail.com

संपादक मण्डल

संरक्षक

डॉ. शिवकुमार शर्मा

संपादक मण्डल

डॉ. नन्द किशोर शर्मा

डॉ. भारती बन्धु

डॉ. विजय शर्मा

परामर्श मण्डल

श्री उपेन्द्र शर्मा

श्री सरदारी लाल गोस्वामी

डॉ. देश बन्धु

डॉ. आर. पी. विज

Dr. AJAY SHARMA
GGDSD College, Sector 32-C, Chandigarh

Mrs. SUNITA BHALLA
PCM S.D. College For Women, Jalandhar

Mr. PAWAN KUMAR
S.S.D. Sr. Sec. School Bathinda

भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय पुरस्कार के लिए चयनित अध्यापक

Ms. MEHAK
PCM S.D. College For Women, Jalandhar

प्रातः स्मरणीय गोस्वामी गणेशदत्त स्मारक पुरस्कार के लिए चयनित विद्यार्थी

'संस्कार और संस्कृति'

'संस्कार और संस्कृति' श्रृंखला के अन्तर्गत पिछले दो अंकों में गर्भाधान, पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन नामक तीन संस्कारों का विवेचन प्रस्तुत किया गया था। प्रस्तुत अंक में जातकर्म एवं नामकरण नामक दो महत्त्वपूर्ण संस्कारों पर प्रकाश डाला जाएगा । जातकर्म संस्कार संतति के जन्म लेते समय सम्पन्न किया जाता है। इस प्रकार यह शिशु–जन्म के समय का संस्कार है। इस संस्कार से प्रसव–जन्य समस्त दोष शांत हो जाते हैं। वस्तुतः प्राकृतिक व अति प्राकृतिक दुष्ट शक्तियों से माता और नवजात शिशु की रक्षा के लिए तथा इन दोनों की आन्तरिक व बाहरी शुद्धि व बलशालिता के लिए इस संस्कार को करने का शास्त्रीय विधान है। पर जातकर्म संस्कार की प्रक्रिया बहुत अधिक जटिल, विस्तृत और इस कारण अव्यावहारिक भी है। इसीलिए कुछ ऋषियों ने अपने–अपने स्मृति ग्रन्थों मे नवजात संतति एवं प्रसूता माता की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए जातकर्म संस्कार की विधि अत्यन्त संक्षिप्त बताई है जो अधिक व्यावहारिक प्रतीत होती है। इन्होंने जातकर्म के समय किये जाने वाले संस्कार सम्बन्धी कुछ कृत्यों को नामकरण संस्कार के अन्तर्गत करने का परामर्श दिया है। शान्तिकुंज हरिद्वार के संस्थापक आधुनिक युग के ऋषिकोटि आचार्य श्री राम शर्मा जी ने भी जातकर्म संबन्धी समस्त कृत्यों को नामकरण के अन्तर्गत करने का सुझाव दिया है। यहां संक्षेप में प्रथमतः जातकर्म संस्कार की विधि का उल्लेख किया जा रहा है।

प्रसव पीड़ा के प्रारम्भ होने से लेकर नालोच्छेदन तक जातकर्म संस्कार की प्रक्रिया है।

प्राङ्नाभिवर्धनात् पुंसो जातकर्म विधीयते।

मन्त्रतः प्राशनश्चास्य हिरण्यमधुसर्पिषाम्।।

जातकर्म सम्बन्धी समस्त कृत्य जैसे – पिता द्वारा वस्त्र सहित स्नान करना, नान्दीश्राद्ध करना, हवन करना, शिशु को विमलीकृत घृत–दही एवं शहद चटाना, बच्चे को माता का स्तनपान कराना आदि समस्त कृत्य नालोच्छेद से पूर्व ही सम्पन्न हो जाने चाहिए क्योंकि नालोच्छेदन के तुरन्त बाद जन्म सम्बन्धी सूतक लग जाता है। पर कुछ ऋषियों ने सुविधा और सुरक्षा को सर्वाधिक महत्त्व देते हुए नालोच्छेदन के पश्चात् भी जातकर्म सम्बन्धी कृत्य करने का विधान कहा है। आचार्य शबर ने दस दिन बाद नामकरण के समय ही जातकर्म के कुछ कर्मों को करने का निर्देश दिया है।

अथर्ववेद में सुरक्षित व सुख पूर्वक प्रसव के लिए एक सूक्त के मन्त्रों द्वारा पूषा देव की प्रार्थना का वर्णन है। पति को चाहिए कि वह पत्नी के सुख पूर्वक प्रसव के लिए इन मंत्रों से पूषादेव की स्तुति करे। इन मंत्रों का भावार्थ इस प्रकार है – हे पूषादेव ! आपके अनुग्रह से गर्भवती नारी सुख पूर्वक शिशु का प्रसव करे। स्त्री के शरीर के सन्धि–स्थल प्रसव करने के लिए विशेष रूप से ढीले हो जाए। आप गर्भ में स्थित शिशु को गति प्रदान करें और प्रसूति के लिए उसे गर्भाशय से बाहर आने के लिए प्रेरित करें। वस्तुतः पत्नी की प्रसव कालीन गम्भीर वेदना को देखकर पति का हृदय विचलित हो जाता है। अतः वह अपनी पत्नी को प्रसव–वेदना से यथाशीघ्र मुक्त करने के लिए देवों से प्रार्थना करता है। देवों के अनुग्रह के फलस्वरूप गर्भिणी के यौनांग शिथिल होकर फैल जाते हैं और इसके परिणामस्वरूप सुख पूर्वक प्रसव हो जाता है। संतति के पुत्र होने पर पिता वस्त्र सहित स्नान करता है। पिता गुरूजनों व वृद्धजनों को बुलाता है तथा नांदीश्राद्ध के उपरान्त जातकर्म संस्कार सम्पन्न करता है जैसा कि ब्रह्म पुराण में उल्लिखित है –

जातं कुमारं स्वं दृष्ट्वा स्नात्वाऽऽनीय गुरून् पिता।

नान्दी श्राद्धावसाने तु जातकर्म समाचरेत।।

जातकर्म संस्कार का प्रथम कृत्य है – मेधा जनन । इस कृत्य में मधु, घृत और दही को एक निश्चित अनुपात में मिलाकर या इनमें से कोई एक पदार्थ विशेषकर मधु या घृत को नवजात शिशु को चटाया जाता है। इसके लिए सोने की शलाका या चांदी की चम्मच का प्रयोग किया जाता है। इस कृत्य को करने से शिशु मेधावी बनता है। मधु या घृत को चार बार चटाते हुए जिन मंत्रों को बोला जाता है उनका भाव इस प्रकार है – 1. मैं तुझमें भूः रखता हूँ । 2. मै तुझमें भुवः रखता हूँ। 3. मैं तुझमें स्वः रखता हूँ। 4. मैं तुझमें एक साथ भूः भुवः स्वः रखता हूँ। यह कार्य स्वयं पिता, पितामह या घर का कोई वरिष्ठ जन करता है। इस प्रक्रिया में उच्चरित तीन व्याहृतियाँ – भूः भुवः स्वः बुद्धि की प्रतीक हैं। इससे शिशु बुद्धिमान एवं मेधावी बनता है। मधु, घी एवं दही के मिश्रण के शेष भाग को किसी अपवित्र स्थान पर नहीं रखना चाहिए बल्कि इसे गऊ के चारे आदि में मिला देना चाहिए।

मधु, घृत आदि के चटाने के उपरान्त पिता या कर्म के लिए नियुक्त व्यक्ति अपने मुख को शिशु के दाहिने कान की ओर

झुका कर तीन बार वाक् शब्द का उच्चारण करता है। साथ ही 'त्वम् वेदोऽसि' (अर्थात् तू वेद है, ब्रह्म है, उसी का अंश है।) वाक्य का उच्चारण करते हुए शिशु को एक गुप्त नाम दिया जाता है। यह एक ऐसा नाम है जिसे केवल माता पिता या घर के वृद्ध जन ही जानते हैं। आधुनिक भाषा में हम इसे 'कोड वर्ड की तरह दिया गया 'कोड नाम' कह सकते हैं। इस नाम को कभी भी प्रकट नहीं किया जा सकता क्योंकि नवजात शिशु पर उसके नाम के सम्बोधन से कोई जादू टोना या अभिचार का प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार के अभिचारों पर अंकुश लगाने के लिए प्रसूति गृह के द्वार पर दस दिन तक अग्नि स्थापित करनी चाहिए। इस अग्नि को सूतिका–अग्नि या उत्तपनीय कहा जाता है। इस अग्नि में प्रतिदिन प्रातः एवं सायं काल को पीली सरसों एवं चावल की आहुति दी जाती है। ग्रामीण क्षेत्रों में आजकल भी इस सूतिका अग्नि का प्रचलन है। पर जातकर्म सम्बन्धी अन्य सभी कृत्य नगरों, महानगरों एवं ग्रामीण अंचलों में भी अप्रचलित एवं लुप्त प्रायः हैं। वस्तुतः नवजात शिशु के साथ इतना विस्तृत और दुर्वह संस्कार सुविधाजनक एवं व्यावहारिक नहीं कहा जा सकता। इससे नवजात शिशु के कोमल–मृदुल शरीर को क्षति पहुँच सकती है। आधुनिक चिकित्सा–विज्ञान इस प्रकार के धार्मिक क्रिया–कलापों एवं उपचारों का प्रबल विरोध करता है।

वस्तुतः इस संस्कार का सबसे महत्त्वपूर्ण कृत्य है – शिशु को माँ का दूध पिलाना। माँ की देह से निर्मित एवं उत्पन्न शिशु के लिए माँ का दूध ही सर्वोतम आहार एवं पोषक पदार्थ है। अतः नवजात शिशु को जल्दी से जल्दी माँ की छाती से लगाना व उसे स्तन–पान कराना जातकर्म संस्कार का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कर्म है। माँ के स्तन दूध के साथ–साथ वत्सलता की भी गंगोत्री है। माँ के स्तनों का स्पर्श व दुग्धपान कर शिशु इस अज्ञात संसार में स्वयं को सुरक्षित अनुभव करता है। क्योंकि वह गर्भस्थ स्थिति जैसे सुरक्षित परिवेश में अपने को देखता है। भारत के अनेक अंचलों में यह लोकप्रथा आज भी प्रचलित है कि शिशु को स्तनपान कराने से पहले सास, बुआ या ननद अथवा अन्य कोई महिला प्रसूता के स्तनों को पहले प्रक्षालित करती है और फिर बच्चे को माँ का स्तनपान कराती है। इस रस्म के लिए प्रसूता की ओर से दूध पिलाने वाली महिला को नेग (दक्षिणा) रूप में कोई आभूषण आदि भी प्रदान किया जाता है। जातकर्म के पश्चात् कुछ अंचलों में छठे दिन षष्ठी पूजन किया जाता है।

नामकरण संस्कार – यह संस्कार शिशु को सांसारिक नाम (अभिधान) देने से सम्बन्धित है। इस नाम से ही नवजात शिशु को भविष्य में सम्बोधित किया जाता है। यद्यपि इससे पूर्व पैदा होते ही जातकर्म संस्कार के अन्तर्गत शिशु को एक गुप्त नाम दे दिया जाता है जिसे केवल माता–पिता एवं परिवार के जन ही जानते हैं। वास्तव में शिशु के चार नाम हो सकते हैं। कम से कम दो नाम तो लगभग सभी के होते हैं। प्रथम नाम गुप्त नाम है। दूसरा 'नाक्षत्र' नाम है। शिशु जिस नक्षत्र के जिस चरण में पैदा हुआ है उसके वर्ण के आधार पर नाम रखना 'नाक्षत्र' नाम कहलाता है। तीसरा नाम सबसे अधिक प्रचलित होता है। यह सर्वसाधारण को ज्ञात होता है। समाज इसी नाम से बच्चे को सम्बोधित करता है। इसी नाम के लिए नामकरण संस्कार किया जाता है। चौथा नाम व्यक्ति की किसी विशेषता के आधार पर रखा जाता है। यह नाम अपने कुल की परम्परा के आधार पर या गोत्र, प्रवर आदि के आधार पर रख दिया जाता है जैसे गौतम, आंगिरस, पाराशर, गार्गी, अग्निहोत्री, सोमयाजी आदि। कवि लोग जिस उपनाम से साहित्य–सर्जना करते हैं वह उनका चतुर्थ नाम ही होता है जैसे निराला, दिनकर, निर्मोही, वियोगी आदि।

सामान्यतः नामकरण संस्कार दसवें, ग्यारहवें या बारहवें दिन करने का लोकप्रचलन है। पर स्मृति ग्रन्थों एवं सूत्र ग्रन्थों में दिनों की संख्या में पर्याप्त मत भेद है। उपर्युक्त दिनों के अतिरिक्त 16वें, 18वें, एक मास, 40वें, 100वें दिन यहां तक कि विशेष परिस्थितियों में एक वर्ष पश्चात् भी नामकरण करने का विधान है। कुछ वर्जित नक्षत्रों, मलमास, अधिकमास, क्षयमास, क्षयपक्ष, अमावस्या, संक्रांति, ग्रहण, श्राद्ध दिवस आदि की स्थिति में या शिशु के प्रसव के उपरान्त घर में किसी अनिष्ट हो जाने की स्थिति में नामकरण संस्कार को सुविधानुसार कुछ दिन एवं मास के लिए टाला जा सकता है। पर इस मत पर सभी ऋषिगण सहमत हैं कि दस दिन से पूर्व नामकरण संस्कार नहीं करना चाहिए। कुछ अंचलों में नामकरण संस्कार से पहले छठे दिन विधिविधान से 'षष्ठीपूजन' किया जाता है जिसमें माता एवं शिशु का अभिषेक स्नान, नववस्त्र धारण आदि कृत्य किए जाते हैं। अपरार्क महर्षि का मत है कि लोग अपने–अपने गृह सूत्रों के अनुसार तथा सुविधा के अनुसार नामकरण की तिथि का निर्णय करें। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि नामकरण संस्कार के दिन को निर्धारित करने में हमारे ऋषियों ने बहुत अधिक नमनीयता एवं उदारता दिखाई है।

नामकरण संस्कार का फल शिशु के आयु व तेज की वृद्धि एवं लौकिक व्यवहार की सिद्धि को बताया गया है। 'स्मृति–संग्रह में कहा गया है –

आयुर्वर्चोऽभिवृद्धिश्च सिद्धिर्व्यवहृतेस्तथा।
नामकर्मफलं त्वेतत् समुद्दिष्टं मनीषिभिः।।

शिशु के जन्म से जन्य अशौच या सूतक के समाप्त हो जाने पर घर को प्रक्षालित व शुद्ध किया जाता है। माता व शिशु को स्नान कराया जाता है। उन्हें शुद्ध वस्त्र पहनाए जाते हैं। पूजा मण्डप में प्रवेश करते ही सर्वप्रथम माता–पिता तथा शिशु का पूजा–कलश के जल से वैदिक मंत्रों द्वारा अभिषेक किया जाता है। वस्तुतः यह अभिषेक एक प्रकार से नवजात शिशु का अभिनन्दन है। उस पर दिव्य जल से देव शक्तियों के अनुग्रह की वृष्टि हो रही है ताकि वह भविष्य में निष्ठा के साथ अपने सांसारिक दायित्वों का निर्वाह कर सके। गणपति पूजन, कलश पूजन एवं नवग्रह पूजन व हवन आदि सम्पन्न हो जाने पर पिता शिशु की कमर में मेखला (सूती धागा या रेशमी धागा) बाँधते हुए यह भावना करे कि इस संस्कारी सूत्र के साथ बालक में तत्परता, जागरूकता और संयमशीलता जैसी सत्प्रवृतियों की स्थापना की जा रही है।

इसके पश्चात् मधु प्राशन कृत्य किया जाता है। यद्यपि जातकर्म संस्कार में मधु प्राशन क्रिया का उल्लेख किया गया है। पर इस क्रिया को नामकरण संस्कार के समय करना अधिक उपयुक्त एवं श्रेयस्कर है। स्वर्ण शलाका या चाँदी की चम्मच आदि से मधु, घृत आदि चटाने का कार्य घर के किसी वरिष्ठ जन से कराना चाहिए। मधु प्राशन के माध्यम से बालक की जिव्हा में शुभ, प्रिय, मधुर, हितकारी एवं कल्याणप्रद वाणी के संस्कार स्थापित किए जाते हैं। इस अवसर पर निम्न मंत्र उच्चरित किया जाता है –

ॐ प्रते ददामि मधुनो घृतस्य, वेदं सवित्रा प्रसूतं मघोनाम्।
आयुष्मान् गुप्तो देवताभिः, शतं जीव शरदो लोके अस्मिन्।।

सूर्य नमस्कार एवं भूमि पूजन तथा भूमि स्पर्श आदि कृत्यों के सम्पन्न हो जाने पर नवजात शिशु के नाम की घोषणा की जाती है। शिशु के लिए निर्धारित नाम को आचार्य या गुरूजनों को पहले ही किसी थाली या तख्ती आदि पर चंदन, रोली आदि से सुन्दर ढंग से लिख कर उस पर चावल एवं फूलों की पंखुडियाँ चिपका देनी चाहिएँ तथा उसे लाल या पीले रंग के स्वच्छ, सुन्दर वस्त्र से ढक देना चाहिए। नाम घोषणा एवं थाली से वस्त्र हटाने से पहले निम्न मंत्र का उच्चारण करना चाहिए –

ॐ मेधां ते देवः सविता मेधां देवी सरस्वती।
मेधां ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ।।

मंत्रोच्चार के पश्चात् आचार्य या घर का कोई वरिष्ठ जन शिशु के नाम की घोषणा करे तथा इस नए नाम के सम्बोधन के साथ सभी उपस्थित जन शिशु को निम्न प्रकार से आशीर्वाद प्रदान करें –

1. शिशु – (राम, श्याम, सीता, गीता आदि) चिरंजीवी हो। ऐसा तीन बार बोलें।
2. शिशु – (राम, श्याम, सीता, गीता आदि) धर्मशील हो। ऐसा तीन बार बोलें।
3. शिशु – (राम, श्याम, सीता, गीता आदि) तेजस्वी / यशस्वी हो। ऐसा तीन बार बोलें।

पूर्ण आहुति के पश्चात् नवजात शिशु को सम्बोधित किया जाता है। यद्यपि शिशु भाषा को समझ नहीं पा रहा है। पर इस उद्‌बोधन की स्नेहमयी ध्वनि तरंगों को तथा इससे उत्पन्न होने वाले स्नेह स्पन्दनों को बाल हृदय सहज रूप में अनुभव करता है और समझता है कि उसे वात्सल्यमयी प्रकृति माँ का सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत प्राप्त हो रहा है। इस प्रक्रिया को सम्पन्न करते समय आचार्य / पिता अथवा पितामह शिशु को गोद में लेता है व उसके कान के पास निम्न मंत्र बोलता है –

ॐ शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि, संसारमाया परिवर्जितोऽसि।
संसारमायां त्यज मोहनिद्रां, त्वां सद्‌गुरुः शिक्षयतीति सूत्रम्।।

उद्‌बोधन के पश्चात् आचार्यजन माता–पिता एवं शिशु पर पुष्पों एवं अक्षतों की वृष्टि कर उन्हें आशीर्वाद रूप में नारियल फल एवं मिष्ठान्न आदि प्रदान करते हैं। यजमान एवं पिता आचार्य एवं ब्राह्मणों को दक्षिणा प्रदान करता है और इस प्रकार नामकरण संस्कार सम्पूर्णता को प्राप्त होता है। अगले अंक में अन्न प्राशन एवं मुण्डन संस्कारों पर प्रकाश डाला जाएगा।

– डॉ नन्द किशोर शर्मा
प्रधान सम्पादक

वैदिक सन्ध्योपासना एवम् सनातन धर्म के नियामक मूल्य

"सदा+टयुल", तुट्, नि.दस्थ नः से निर्मित 'सनातन' शब्द का अर्थ है नित्य, निरन्तर, शाश्वत, दृढ़ स्थिर, निश्चित, पूर्वकालीन अथवा प्राचीन। वहीं दूसरी ओर 'हिन्दू–धर्म–कोश' के अनुसार सनातन ब्रह्मा के द्वितीय पुत्र अथवा ब्रह्मा विष्णु एवं शिव के पर्याय हैं एवं हेमचन्द्र के अनुसार सनातन पितरों के अतिथि हैं। परन्तु तैत्तिरीय संहिता में सनातन नाम के ऋषि का भी उल्लेख मिलता है एवं साथ ही बृहदारण्यकोपनिषद् में दो वंश–सूचियों का उल्लेख मिलता है जिसमें सनातन नाम के ऋषि का उल्लेख किया गया है एवं धर्म शब्द की व्याख्या "ध्रियते लोकोऽनेन, धरिता लोकं वा (धृ+मन्) करते हुए कर्त्तव्य, जाति, सम्प्रदाय आदि में प्रचलित आचार का पालन, कानून, प्रचलन, दस्तूर, प्रथा, अध्यादेश, अनुविधि, धार्मिक या नैतिक गुण, भलाई, नेकी, अच्छे काम, चार पुरुषार्थों में से एक पुरुषार्थ, शास्त्र विहित आचरण, क्रम, अधिकार, न्याय–औचित्य वा न्याय–साम्य, निष्पक्षता, पवित्रता, शालीनता, नैतिकता आदि के संदर्भों में लिया गया है। वहीं दूसरी ओर 'धर्म' शब्द की व्याख्या करते हुए 'किसी वस्तु की विधायक आन्तरिक वृत्ति को उसका धर्म कहते हैं। प्रत्येक पदार्थ का व्यक्तित्व जिस वृत्ति पर निर्भर है वही उस पदार्थ का धर्म है। प्राचीन भारतीय वैशेषिक दर्शन 'धर्म' शब्द की व्याख्या करता हुआ कहता है कि जिस वस्तु से अभ्युदय एवं निश्रेयस सिद्ध हो वही धर्म है। वहीं मनुस्मृति में धर्म के चार प्रकार के लक्षणों की बात कही गयी है – वेद, स्मृति, सदाचार एवं आत्मसन्तोष।

अतः सनातन धर्म का शब्दकोशानुसार जो अर्थ सामने आता है वह है – एक विशिष्ट जाति की विधायक आन्तरिक वृत्ति जो शाश्वत है अथवा पुरातन, स्थिर अथवा दृढ़ है।

सनातन धर्म की अनेक विशेषताएँ हैं जैसे – कर्मफलवाद, एकेश्वरवाद, बहुदेववाद, मूर्तिपूजा, विश्वकल्याण की भावना, मानवीय जीवन की चार अवस्थाएँ अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास आदि। परन्तु सनातन धर्म आज भी जिन कारणों से विश्व में अपने आप में अनूठा धर्म है उनमें मानवीय जीवन से मंगलेच्छा की भावना एवं जीवन सत्य को जानने–समझने एवं उसे अपने जीवन में उतारने की इच्छा आदि प्रमुख हैं जो हिन्दू जाति में प्रखर एवं प्रधान रूप से विद्यमान हैं।

यह बात निश्चित तौर पर नहीं कही जा सकती कि सनातन धर्म का उदभव एवं विकास आर्य एवं आर्येतर जाति के सम्मिश्रण से हुआ अथवा नहीं एवं आर्य जाति भारतीय भूखण्ड पर पूर्व उपस्थित द्राविड़ जाति को पराजित कर स्थापित हुई अथवा नहीं। परन्तु यह बात निश्चित तौर पर कही जा सकती है कि आर्य जाति ने अथवा आर्य एवं आर्येतर जातियों के सम्मिश्रण ने जिस धर्म का प्रतिपादन किया वह निश्चित तौर पर मानव को मानवीय धरातल पर अंकित कर उसको अपनी कर्त्तव्य भावना के साथ जोड़ने, जीवन के मुखरित सत्य को समझने एवं समझाने का जो प्रयास सनातन धर्म ने किया वह विश्व के किसी भी समसामयिक धर्म में कमोबेश कम ही पाया जाता है। इसका स्पष्ट कारण एक यह भी हो सकता है कि सनातन धर्म कहीं भी कभी भी किसी भी परिस्थिति में धार्मिक विद्वेष–भावना को बढ़ावा नहीं देता अपितु स्वयं संतुष्ट होकर वह दूसरों की मंगल कामना करता हुआ दूसरों के साथ आपसी तालमेल एवं संगति को ढूंढने का प्रयास करता है।

हमारा प्राचीन शास्त्रीय साहित्य इसी बात को अपने संदर्भों में कुछ इस प्रकार प्रकट करता हुआ और जीवन सत्य को समझने का प्रयास करता हुआ ईश्वर से प्रार्थना करता है –

हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत् त्वम् पूषन्नपावृणु सत्य धर्माय दृष्टये।।

अर्थात् जीवन के सत्य को समग्र रूप से जानने की उत्सुकता लिए कवि हृदय व्यक्ति सूर्य से प्रार्थना करता हुआ कहता है कि जीवन सत्य को हे सूर्य! आपने अपने भीतर ही छुपाया हुआ है। आप अपने सत्य रूप को मुझे दिखाओ, जो सत्य धर्म रूप है।

सनातन धर्म की देवताओं से की गई यह प्रार्थना निश्चित रूप में ही द्रष्टव्य है जहां कवि हृदय व्यक्ति अपने को पूर्व कृत पापों से रहित करने की प्रार्थना करता हुआ देवताओं का यजन करते हुए कहता है –

द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव।
पूतं पवित्रेणेमाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।

अर्थात् आप देव मुझे भी पापों से रहित उसी प्रकार करें (अर्थात् हमें निष्पाप कर दें) जिस प्रकार पवित्रक आदि से घी शुद्ध होता है।

वस्तुतः सनातन धर्म के मूल मन्त्र में ही उस ईश्वर से प्रार्थना की है कि हम उस का भजने योग्य तेज का ध्यान करते हुए प्रार्थना करते हैं कि वह तेज हमारी बुद्धि को सत्कर्मों की ओर प्रेरित करे क्योंकि वही संपूर्ण विश्व को उत्पन्न करने वाला एवं तीनों लोकों में सच्चिदानन्दमय परब्रह्म वही है। सनातन धर्म ऐसा मानता हुआ ईश्वर से पुनः प्रार्थना करता है कि वह सौ वर्षों तक देखते रहें, सौ वर्षों तक सुनते रहें, सौ वर्षों में हम कभी दीनभाव को प्राप्त न हों। इस प्रकार सौ वर्षों तक जीकर हम पुनः सौ वर्ष और जिएँ –

जीवेम शरदः शतं, श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

अर्थात् सनातन धर्म इस बात को समझता है कि सौ वर्ष के जीवन का समय जीवन सत्य को समझने के लिए नाकाफी है, विशेषतः उन संदर्भों में जब वह अदीन होने की बात करता है। क्योंकि कारण स्पष्ट है कि सही एवं उचित मार्ग पर चलते हुए व्यक्ति कभी भी दीनता का शिकार नहीं हो सकता। इसीलिए लम्बे जीवन में सत्य को जानने एवं समझने के लिए वे निरंतर प्रयत्नशील हैं एवं वे ऐसे जीवन की अपेक्षा रखते हैं जो सत्कर्म के द्वारा प्रेरित हों और दूसरों की भलाई के लिए निबद्ध हों क्योंकि आर्य सनातन धर्म की स्पष्ट उद्घोषणा स्वयं ही मृत्यु को बखानती है कि मृत्यु देहपात नहीं है अपितु भय ही मृत्यु है, गफलत करना ही मृत्यु है। इसी लिए बिना किसी गफलत के निर्भीक भाव से जीवन जीते हुए उत्तम ज्योति रूप परमात्मा को प्राप्त करने की बात कही है। इस ज्योतिस्वरूप परमेश्वर को उन्होंने भलीभाँति देखा है –

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्तमुत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

ऐसा प्रमाद एवं भय रहित जीवन जीते हुए सनातन धर्म अपने को अहंकार रहित बनाने का प्रयास करता है कि अनेन .... कर्मणा श्री परमेश्वरः प्रीयतां न मम। तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु। अर्थात् यह संपूर्ण मेरे द्वारा किया गया कर्म परमेश्वर की ही प्रीति के लिए किया है। अतः यह कर्म ईश्वरार्पण हो।

हालांकि यह संपूर्ण कर्म सभी प्रकार से परमेश्वर को ही अर्पित करना इस धर्म की विशेषता है अर्थात् जीवन रूपी यज्ञ में किया हुआ प्रत्येक कर्म ईश्वरार्पण है परन्तु ऐसी सरल ह्रदयता इस से बढ़कर विश्व के किस भी समसामयिक धर्म में कहीं नहीं मिलती। जब सनातन धर्म पुनः ईश्वर का कृतज्ञतापूर्वक स्मरण करता हुआ कहता है कि उस के द्वारा कृत कर्म में यदि कहीं कोई कमी पेशी रह गयी है अथवा अज्ञानतावश कोई विधि छूट गई है तो ईश्वर व्यक्ति की सही एवं सच्ची भावना को समझकर उस कमी को दूर करें एवं उस कार्य को पूर्ण रूप से अपने लिए किया गया ही समझें –

"न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।"

अर्थात् परमेश्वर का स्मरण कर जो भी व्यवस्था अपूर्ण ज्ञान के कारण छूट गयी अथवा रह गयी उसे परमात्मा स्वयं पूर्ण कर तृप्ति प्राप्त करें।

वस्तुतः सनातन धर्म हमेशा से ही इस बात के लिए देवताओं से आग्रहशील रहा कि मनुष्य जीवन में पाप एवं पुण्य दोनों ही साथ साथ चलते हैं। परन्तु सनातन धर्म की श्रेष्ठता तब प्रकट होती है जब वह सूर्य जो कि क्रोध के देवता एवं क्रोध के स्वामी हैं उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे सभी क्रोधवश किए गये पापों से हम सभी की रक्षा करें एवं हमें पाप रहित बनाने का उपक्रम करें। रात्रि समय में हमारे शरीर, हाथ, मन, पैर, वाणी इत्यादि से जो भी पाप कर्म किए हैं उनसे वे सभी रक्षा करें एवं जो पाप वर्तमान में इस शरीर में विद्यमान हैं उन्हें सूर्य की रश्मियों में साक्षात् अर्पण करता है ताकि हम सभी निष्पाप हो जाएँ एवं भय रहित हो जाएँ।

"यत्किञ्च दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।"

अर्थात् जो कुछ भी मेरे में बुराई है उस बुराई को मैं साक्षात् अमृत योनि सूर्य की रश्मियों में हवन करता हूँ ताकि मैं पाप रहित हो जाऊँ एवं जीवन सत्य को समझ सकूँ।

आधुनिक संदर्भों में यह द्रष्टव्य है कि जहां मनुष्य की तार्किकता एवं भाव बोध पाप पुण्य के भेद से परे है वहीं दूसरी ओर सनातन धर्म जीवन को पाप रहित बनाने में विश्वास रखता है क्योंकि उस का अन्तिम सत्य परमात्मा का साक्षात्कार है एवं उस साक्षात्कार में मल, विक्षेप एवं आवरण तीन दोष बाधक माने गये हैं। इसी लिए इन तीनों प्रकार के मलों को नियामक करने हेतु अघमर्षण सूक्त का प्रयोग किया गया जो अश्वमेघ यज्ञ के समान सभी पापों को नष्ट करने वाला है –

यथाश्वमेघः क्रतुराट् सर्वपापापनोदनः।
तथाघमर्षणं सूक्तं सर्वपापापनोदनम्।।

विश्व के समसामयिक धर्मों में सनातन धर्म के अतिरिक्त शायद ही ऐसा कोई धर्म है जो क्रोध का आधिदैवीकरण करता हो एवं पाप को पुरुष रूप में इतने खुलेपन से स्वीकार करता हो। अतः सनातन धर्म पाप का अस्तित्व मानता है और सूर्य के माध्यम से अपने को पवित्र करने का प्रयास करता है ताकि जीवन के यथार्थ को जान कर आगे बढ़े। महर्षि वशिष्ठ राम को विभिन्न कथाओं के माध्यम से उपदेश करते हुए कहते हैं कि अज्ञानी का जीवन ही मृत्यु है। इसीलिए महर्षि वशिष्ठ राम को ज्ञानी बनने का उपदेश करते हैं ताकि वे जीवन के श्रेष्ठतम सत्य की ओर अग्रसर हों और जीवन के सही अर्थ को प्राप्त कर सकें।

भारतीय संदर्भों में जीवन जीना एक कला है। परन्तु उससे भी ऊपर श्रेष्ठ जीवन जीना एवं सही मार्ग पर चलना है। सनातन धर्म आरंभ से यह विचार करता रहा है कि आर्ष ज्ञान पूर्वक जीवन ही वास्तव में जीना है और वही जीवन के सत्य की ओर उन्हें अग्रसर भी करता है। क्योंकि उसके बिना जीना सफल जीना नहीं है। वह जीना तो प्रकृति द्वारा दी गई विवशता है। कबीर का अहसास इस बारे में बहुत गहरा है –

देह धरे का दण्ड है, सबकाहू को होय।
ज्ञानी भोगे ज्ञान से, मूरख भोगे रोय।।

अर्थात् जीवन–सत्य को जो नहीं जानता, जो जीवन के सत्य मार्ग की ओर नहीं अग्रसर होता और ज्ञानपूर्वक कर्म नहीं करता वही मूर्ख है एवं अपने कर्म को ज्ञानपूर्वक न करते हुए दुःख भोगता है।

अतः सम्पूर्ण सत्य को जानकर अथवा जीवन के श्रेष्ठ मार्ग को अपना कर जीवन जीने की कला को ही सनातन धर्म अग्रसर करने का यत्न करता है। कारण स्पष्ट है कि जो ऐसा जानकर जीवन के श्रेष्ठ मार्ग पर अग्रसर होता है वह किसी की निन्दा नहीं करता, न ही किसी से द्वेष करता है और उसी को सत्य का ज्ञान होना संभव है क्योंकि उसी का ज्ञान प्रतिष्ठित होता है। अतः जरूरत इस बात की है कि जीवन सत्य को समझा जाए और उसी ज्ञान के अनुसार आचरण किया जाए तो ऐसा कर्म मनुष्य को लिप्त नहीं करता–एवं त्वयि नान्यथेतोऽसि न कर्म लिप्यते नरे।" उपनिषद् वाक्य का संभवतः अर्थ इसी संदर्भ में लिया जाता है कि सत्य को जान कर सत्य मार्ग पर यदि मनुष्य अग्रसर होता है तो वही सनातन धर्म का मर्म है अन्यथा कुछ नहीं।

सनातन धर्म का दूसरा विशिष्ट गुण है – मंगलेच्छा अर्थात् प्राणिमात्र के लिए मंगलेच्छा। प्राचीन वैदिक एवं उपनिषद् साहित्य पर यदि हम दृष्टिपात करते हैं तो पता लगता है कि उदारचेता व्यक्ति की सोच कैसे काम कर सकती है एवं वह कैसे सतत् दूसरों के हित साधन में लगातार लगे रहता है। यहां स्पष्ट करना उचित ही होगा कि हित करने का अर्थ किसी भी अन्य प्राणी का अहित नहीं करना है क्योंकि महाभारत का यह घोष संपूर्ण रूपेण यही कहता है कि सत्य बोलना अच्छा है। हित से जुड़ा सत्य श्रेष्ठ है। परन्तु श्रेष्ठतम सत्य जीवन का वह सत्य है जो प्राणिमात्र के कल्याण के साथ जुड़ा है। अर्थात् जीवन सत्य को समझना एवं उस पर आचरण श्रेष्ठ तभी हो सकता है यदि वह आत्यंतिक रूप से प्राणिमात्र के सत्य से जुड़ा है यदि वह कल्याणकारी नहीं है वह सत्य चाहे जो भी हो वह सत्य के रूप से कुछ और ही होगा। क्योंकि "सत्य अपना पूरा मूल्य चाहता है। उसके साथ समझौता नहीं हो सकता। साहित्य के चरम सत्य को पाने के लिए भी उस का पूरा पूरा मूल्य चुकाना ही समीचीन है।" अतः सत्य वही श्रेष्ठ है जो दूसरे के प्रति सौहार्द आदि सद्गुण सिखाए।

प्राचीन एवं अर्वाचीन विश्व के समस्त धर्मों में से शायद सनातन धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिसने 'मा गृधः कस्यस्विद्धनम्' कहा है कि दूसरे के धन पर अपना अधिकार मत जताओ। इसी लिए 'मा हिंस्यात् सर्वाभूतानि अर्थात् हिंसा मत करो चाहे वह मानसिक, वाचिक अथवा कायिक हो, सभी प्रकार की हिंसा का बहिष्कार कर समसामयिक समाज को अपने में स्थित करने का प्रयास किया ताकि धर्म के माध्यम से विद्वेष भावना न फैले। शायद वाल्मीकि ने व्याध द्वारा की गई क्रौंच हत्या से दुःखी होकर उसे प्रतिष्ठित न होने का शाप दे डाला था।

साहित्य, चाहे किसी भी भाषा में हो, उसकी अर्थवत्ता तब तक नहीं होती जब तक वह साधारण जीवन से साक्षात् जुड़ा न हो। वैदिक साहित्य वास्तविक तौर पर सामान्य मनुष्य से जुड़ा होने के साथ ही साथ जीवन को नवीन गति एवं नई सोच देने का प्रयास करता है। इसीलिए ईशावास्योपनिषद् के माध्यम से कवि हृदय अग्नि का साक्षात् आह्वान करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करता है

कि हे ईश्वर! आप हमारे सभी कर्मों के साक्षी हैं। हमारे सभी असत् कर्म हमारे में से हटाओ। इसीलिए हम आपकी स्तुति करते हैं। साहित्य के माध्यम से ईश्वर को की गई यह प्रार्थना अपने आप में अनूठी इसलिए है कि कवि हृदय इस तथ्य को स्वीकार करते हुए चलता है कि जीवन में असत् कर्म भी होते हैं। परन्तु व्यक्तित्व में निखार तब आता है जब कमियों को स्वीकार किया जाए एवं उन्हें त्याग कर जीवन को श्रेष्ठतर मार्ग पर ले जाया जाए। इन्हीं संदर्भों में कठोपनिषद् का शान्तिपाठ द्रष्टव्य है जो साथ–साथ रहते हुए एक दूसरे की रक्षा करने, भोगने, बल की रक्षा करने आदि के बारे में है। इसका अर्थ कुछ इस प्रकार भी हो सकता है कि जहां एक ओर विश्व में वर्ग संघर्ष की बात हो रही है अथवा जहां 'कों जिटो अर्गो सम' कह कर केवल अपने अस्तित्व की बात विचारक करता है वहीं सनातन धर्म संसार में प्रत्येक स्तर पर संगति बैठा कर आत्माभिव्यक्ति करने का प्रयास करता है एवं दूसरे के अस्तित्व को केवल इसलिए नकार नहीं देता कि वह सोच सकने में पूर्णतः समर्थ नहीं हैं। जीवन के इसी सत्य के संदर्भ में यजुर्वेद का यह स्पष्ट उद्घोष है कि हे विश्वेदेवगण! आप लोगों में से जो अन्तरिक्ष में हों, द्युलोक में हों, आप अग्नि के समान जिह्वा वाले एवं यजन करने योग्य हों। आप सभी हमारे इस आह्वान को सुनें एवं कुशासन पर बैठकर (मेरे द्वारा दिए जल से) तृप्त हों। इसी क्रम में यजुर्वेद के सृष्टि, पितृपक्ष, मातृपक्ष एवं जीवन के तर्पण आदि का विधान करते हुए विदेह पक्ष को भी मान्यता देकर मनुष्य मात्र के द्वारा की गई श्राद्ध परम्परा के निर्वाह से कृतज्ञता ज्ञापन का कार्य सिखा देते हैं। ताकि रात एवं दिन पिता के समान पालन करने वाला सूर्य, माता के समान पोषण करने वाली यह पृथिवी, वनस्पति एवं हमारा सारा गौवर्ग मधु के समान दूध देने वाला हो। केवल इतनी ही प्रार्थना नहीं अपितु कवि हृदय प्रत्येक ऋतु को भी पितृ–तुल्य मानता हुआ प्रार्थना करता है कि वे उन्हें उत्तम गृहस्थ प्रदान करने का आशीर्वाद दें।

वस्तुतः सनातन धर्म कृतज्ञता ज्ञापन का ऐसा धर्म है जो सबके सह अस्तित्व की न केवल बात करता है अपितु अपने को इस प्रकृति के अनुसार ढाल कर अपने को अनुरूप बनाने का प्रयास भी बराकर करता है। उसके अनुसार जीवन का यही मधु है, यही रस है, यही विद्या है। जो जीवन के इस तत्त्व को जान लेता है वही ''अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते'' अर्थात् वह मनुष्य अपनी अविद्या के प्रति सजग होकर अपनी रोज रोज की प्रमाद रूप मृत्यु से छूट जाता है तथा अपने स्वरूपलाभ रूप विद्या से अमृत रूप ब्रह्मानन्द के लाभ का अधिकार प्राप्त कर लेता है।

– डॉ आदित्य आंगिरस
प्रवक्ता हिन्दी
साधु आश्रम, होशियारपुर

श्रद्धेय पं. अमरनाथ शर्मा जी की पुण्यतिथि पर हुए कार्यक्रम की रिपोर्ट

सनातन धर्म के महान स्तम्भ, भारत रत्न पं. महामना मदन मोहन मालवीय जी के अनन्य अनुयायी, महान स्वतंत्रता सेनानी, महान शिक्षाविद, राजनीतिज्ञ, सनातन धर्म के गौरव आदरणीय पं. अमरनाथ शर्मा जी की 17 फरवरी 2018 को सभा के मुख्य कार्यालय भूपेन्द्र भवन, पहाड़गंज, नई दिल्ली में पुण्यतिथि मनाई गई। सभा के कार्यवाहक प्रधान श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी, उप प्रधान, श्री रमेश आनन्द, कार्यालय मंत्री श्री डी.आर. मदान, संयुक्त मंत्री श्री वीरेन्द्र कत्याल, सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार के प्रशासक डॉ. आर.पी. विज एवं स्टाफ के सभी कर्मचारियों ने उनके चित्र पर माल्यार्पण किया एवं अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा गायत्री मंत्र का जाप तथा दो मिनट का मौन रखा गया। सभा के कार्यवाहक प्रधान श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी जी ने पूज्य पंडित अमरनाथ जी के बारे में बताया कि हमें उनके बताये हुए मार्ग पर चलना चाहिए, यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। श्रद्धांजलि सभा के पश्चात् लंगर का आयोजन भी किया गया।

इन्द्रमोहन गोस्वामी
कार्यवाहक प्रधान

डी.आर. मदान
कार्यालय मंत्री

सनातन धर्म का पारम्परिक स्वरूप-चिन्तन एवम् आधुनिक यथार्थ

सनातनता सदा प्रवाहशील एवं व्यापक तत्त्व है। इसने भारतीय मानस को सदा प्रभावित किया है और उसे दिशा-निर्देश भी दिया है। धर्म की सनातनता इस अर्थ में है कि यह अनादि और अनन्त है। धर्म की चिरन्तनता ही इसे सनातनता प्रदान करती है। इस कारण सनातन धर्म न केवल तत्त्व रूप में बल्कि व्यवहार रूप में भी अन्य धर्मों की परिभाषाओं से भी बहुत अधिक बाहर है। अतः इसके स्वरूप का चिन्तन एवं विश्लेषण एक आवश्यकता है।

'धर्म' शब्द की व्युत्पत्ति एवम् अर्थ :-

'धर्म' शब्द 'धृञ्' धारणे धातु से 'मन्' प्रत्यय करने पर बनता है। 'धृ' धातु का अर्थ है 'धारण करना'। इसी धात्वर्थ के आधार पर 'धर्म' को जगत् का धारक तत्त्व कहा जाता है। 'धरति विश्वम् इति धर्मः' अर्थात् जो जगत् को धारण करे वह धर्म है। 'ध्रियते येन स धर्मः' अर्थात् जिसके द्वारा इस विश्व ब्रह्माण्ड को धारण किया जाता है वह धर्म है। आशय यह है कि धर्म समस्त चराचर जगत् को धारण करता है और सबको धारण करने की योग्यता के कारण ही उसे धर्म कहा जाता है।

मनुस्मृति में धैर्य, क्षमा, मन का निग्रह, चोरी न करना, बाहरी और भीतरी शुद्धि, इन्द्रिय संयम, सात्त्विक बुद्धि, अध्यात्म विद्या, सत्य, क्रोध न करना, धर्म के ये दस लक्षण कहे गए हैं –

'धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।''

उक्त लक्षणों में से प्रथम पाँच मानव के व्यक्तिगत जीवन से सम्बन्धित हैं। इनका सीधा सम्बन्ध कर्ता के साथ होता है। अतः ये वैयक्तिक धर्म कहे जा सकते हैं और क्षमा, अस्तेय, इन्द्रिय-निग्रह, सत्य और अक्रोध इन पांचों का सम्बन्ध कर्ता के साथ-साथ अन्य व्यक्तियों से भी होता है। ये मानव-समाज में व्यवहृत होते हैं, अतः ये सामाजिक धर्म कहलाते हैं।

वैशेषिक दर्शनकार महर्षि कणाद के अनुसार – 'यतोऽभ्युदयनिः श्रेयस्सिद्धिः स धर्मः' अर्थात् जिसके द्वारा लौकिक एवं पारलौकिक (मोक्ष) सिद्धि प्राप्त हो वह धर्म है। यहां पर लोक और परलोक दोनों के साधक तत्त्व को धर्म कहा गया है। महाभारत में कहा गया है –

'धारणाद् धर्म इत्याहु धर्मो धारयते प्रजाः।
यः स्याद्धारण संयुक्तः स धर्म इति निश्चयः।।'

अर्थात् धारण करने के कारण इसे धर्म कहते हैं और केवल धर्म ही प्रजा को धारण करता है अथवा उसकी रक्षा करता है। इसीलिए उसे धर्म कहा गया है। जो धारण की योग्यता रखता है वह धर्म है।

वस्तुतः धर्म का स्वरूप इतना व्यापक एवं विशाल है कि उसको किसी एक परिभाषा अथवा व्याख्या में नहीं बांधा जा सकता। तैत्तरीय आरण्यक में कहा गया है कि 'धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा'। अर्थात् धर्म के सहारे पर ही जगत् की सत्ता निर्भर करती है। धर्म एक स्थिति स्थापक तत्व है, जिससे प्रत्येक पदार्थ की सत्ता स्थिर है। इसी आधार पर महाभारत में धर्म को जगत् का धारक तत्त्व कहा गया है।

धर्म पूरे ब्रह्माण्ड में परिव्याप्त है। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि यह ब्रह्माण्ड धर्ममय क्यों है ? क्या मनुष्य को धर्म का आधार इसलिए मिलता है क्योंकि ब्रह्माण्ड धर्ममय है अथवा धर्म का कोई अलग मूल्य है ? परिणामवाद के अनुसार

ब्रह्माण्ड धर्ममय है इसलिए मनुष्य की हर इच्छा का धारण धर्म के द्वारा किया जाता है। दूसरी तरफ मूल्य की दृष्टि से धर्म का अस्तित्व निराला है। धर्म अपनी नित्यता व अपूर्वता के कारण पूरे ब्रह्माण्ड को समेटे हुए है। इसी विशिष्टता के कारण धर्म को गूढ़ कहा जाता है और उसे अनेक रूपों में व्यक्त किया जाता है। परन्तु आज धर्म जगत् में मिथ्या और कल्पना का ही राज्य है। करोड़ों लोग मिथ्या विश्वासों और मिथ्या तीर्थों में भटक रहे हैं। उनके हितकर जीवन में शुभ परिवर्तन के लिए कोई प्रश्न नहीं उठता ?

जिसे सांसारिक लोग रिवाज़ के बिना पर मज़हब, मत या धर्म कहते हैं उसकी वास्तविकता क्या है ? जिसको मन्दिर कहते हैं उसके भीतर चले जाते हैं और जिसे मस्जिद कहते हैं उसके भी अन्दर घुस जाते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि हम वहाँ पाठ देखेंगे, पूजा देखेंगे, पण्डित एवं मुल्ला देखेंगे ......। एक दूसरे को पूजा या इबादत करता भी देखेंगे, किन्तु प्रश्न यह उठता है कि जिसका अत्याचारी पति मन्दिर या मस्जिद में गया है, क्या उसकी पत्नी विश्वास कर सकती है कि जब वह ईश्वर से मेल करके आएगा तो उसके भीतर के सम्बन्धों में जो वहशीपन है और जो बेवफाई है वह नहीं रहेगी।

इसी प्रकार जो व्यक्ति सम्पूर्ण समाज की शर्मनाक बर्बादी का कारण बन रहा है, वह किसी मन्दिर या मस्जिद में माथा टेक कर पूजा करने या नमाज़ पढ़कर आने के बाद फिर से अपनी पहली अवस्था में लौट आएगा ? जैसे कोई स्त्री एक ही समय में व्यभिचारिणी और पतिव्रता नहीं हो सकती वैसे ही 'व्यवहार' में बुरे एवं पापाचार रखने वाले व्यक्ति क्या परमार्थ में ठीक रह सकते हैं ? यह विषय चिन्तनीय है।

सच्चे धर्म का पहला लक्षण यह है कि वह मनुष्यों के जीवन की पाप रूपी जड़ों को काटता है और मनुष्य का नीच जीवन से उद्धार करता है। जो मत या धर्म मनुष्य को पाप रूपी जीवन से निकालने में कुछ भी सहायक नहीं होते उनका सच्चे धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि कोई व्यक्ति धर्म एवं मत-मतान्तरों के विषय में बड़ी-बड़ी बातें करता रहे परन्तु अपने जीवन की विनाशकारी गति के विषय में कुछ भी चिन्ता और विचार न करे तो वह मनुष्य बहुत बड़े धोखे में है।

जिस प्रकार आग में हाथ डालने से मनुष्य अवश्य जल जाता है और कोई भी देवी-देवता अथवा ईश्वर मनुष्य को उसके फल से नहीं बचा सकता वैसे ही जो व्यक्ति अपने जीवन के सच्चे हित की ओर से अज्ञानी रहकर विनाश पथ पर जा रहे हैं उन्हें उनका कोई कल्पित विश्वास अथवा देवी-देवता विनाश के महादुःखद परिणाम से नहीं बचा सकता। इस सच्चाई को कोई भी समझदार व्यक्ति मानने से इन्कार नहीं कर सकता। जो व्यक्ति रिश्वत या बेईमानी के द्वारा दूसरे के धन का अपहरण करता है वह किसी भी धर्म या मत का लेबल लगाने से धर्मवान नहीं बन जाता। उसका तो धर्म से दूर-दूर तक कोई नाता नहीं होता।

नशा करने वाले, शराब पीने वाले, चोरी करने वाले और जुआ खेलने वाले मनुष्य किसी भी धर्म को मानते हुए वास्तव में पापी हैं। व्यभिचार और बलात्कार जैसे महापाप कर्म करके भी कोई व्यक्ति स्वयं को धर्मवान् समझता है तो वह अपना वास्तविक अर्थात् काला रूप कभी नहीं छोड़ सकता।

यदि माता-पिता और सन्तान, भाई-बहन, पति-पत्नी, देश, जाति और पशुओं आदि के सम्बन्ध में मनुष्य का जीवन नाटकीय और कलहपूर्ण हो तो ऐसे मनुष्य के जीवन में धर्म का दूर तक भी कोई सम्बन्ध नहीं होता। क्योंकि धर्म मनुष्य के सम्बन्धों में स्वर्गीय मेल को लाता है।

एक सच्चा धर्म वह है जो इस दुनिया में फैले हुए सब प्रकार के पापों और बुराइयों का नाश करता हो। धर्म अथवा मज़हब को मानने वालों की संख्या करोड़ों और अरबों तक पहुँचती है। परन्तु उनमें से कितने हैं जो रिश्वत, नशे, चोरी, मांसाहार, जुआ, व्यभिचार और जीवन हत्या से बचे हैं। वास्तविक रूप में हमें एक ऐसे सच्चे धर्म की आवश्यकता है जो हमें उपरोक्त सभी बुराइयों से बचा सके।

हमें एक ऐसे आध्यात्मिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसके अन्दर न केवल अर्थशास्त्र और राजनीति का विशाल आवेशपूर्ण जीवन हो, अपितु आत्मा की सुगूढ़ आवश्यकताओं के लिए भी स्थान हो। किसी सभ्यता का वास्तविक स्वरूप उसकी रूढ़ियों और संस्थाओं से उतना पता नहीं चलता, जितना कि उसके आन्तरिक मूल्यों और मन की सज्जा से पता चलता है। धर्म सभ्यता का आन्तरिक पक्ष है, मानों वह अपने सामाजिक संगठन रूपी शरीर की आत्मा हो। मानवीय कुटुम्ब के पुनर्निर्माण के कार्यों को धर्म द्वारा पूरा किया जाने वाला भाग विज्ञान के भाग की अपेक्षा कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। मानव-शरीर, मन और आत्मा से मिलकर बना है। इनमें से प्रत्येक को अपने लिए समुचित पोषक तत्त्व चाहिए।

शरीर - भोजन और व्यायाम के द्वारा चुस्त रहता है।

मन - विज्ञान और आलोचना के द्वारा सज्ञान रहता है।

आत्मा - कला और साहित्य द्वारा, दर्शन और धर्म के द्वारा प्रबुद्ध रहती है।

संसार को हिला देने वाले लोग सदा आध्यात्मिकता की पृष्ठभूमि से आविर्भूत होते हैं जो मानों विश्व में एक महान चुम्बकीय आकर्षण ला देते हैं, जिनकी आत्मा सैंकड़ों और हजारों में कार्यशील है, जिनका जीवन आध्यात्मिक अग्नि से दूसरों को प्रज्वलित कर देता है, उनकी प्रेरक शक्ति का स्रोत सदा ही धर्म रहा है। जो असीम शक्ति प्रत्येक मनुष्य का स्वभाव तथा जन्मसिद्ध अधिकार है, उसके साक्षात् के लिए धर्म सर्वश्रेष्ठ प्रेरक शक्ति है। चरित्र-निर्माण, शिव और महत् की प्राप्ति, स्वयं तथा विश्व शान्ति की प्राप्ति के लिए धर्म ही सर्वोपरि प्रेरक शक्ति है। परन्तु कोई भी धर्म अन्तिम या पूर्ण नहीं है। धर्म एक गति है, एक विकास है; और सब सच्चे विकासों में नूतन पुरातन के ऊपर टिका होता है। प्रत्येक धर्म में पुरातन के अवशेष विद्यमान हैं, भले ही हम धर्म के वर्तमान रूपों से सन्तुष्ट न हों फिर हम एक अन्य सच्चे धर्म और इसके अच्छे रूप की प्रत्याशा कर सकते हैं।

धर्म का अध्ययन पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक आधार पर होना चाहिए। धर्म सम्बन्धी सीमित और संकीर्ण धारणाओं को नष्ट होना चाहिए। सम्प्रदाय, जाति या राष्ट्र की भावना पर आधारित सारे धर्मों का परित्याग करना होगा। हर जाति या राष्ट्र का अपना-अपना अलग ईश्वर मानना और दूसरों को भ्रान्त करना एक अन्धविश्वास है, उसे अतीत की वस्तु हो जाना चाहिए। ऐसे सारे विचारों से मुक्ति पानी होगी। स्वभावतः ही आने वाले धर्म को विश्वव्यापी होना पड़ेगा।

अतीत में जो कुछ भी सुन्दर रहा है, उसे जीवित रखना होगा, साथ ही वर्तमान के भण्डार को और समृद्ध बनाने के लिए भविष्य का विकास द्वार भी खुला रखना होगा। धर्म को ग्रहणशील होना चाहिए और ईश्वर सम्बन्धी अपने आदर्शों में भिन्नता के कारण एक-दूसरे का तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

धर्मों में अद्‌भुत शक्ति है; पर इनकी संकीर्णताओं के कारण इनसे कल्याण की अपेक्षा हानि अधिक हुई है। अतः धर्म के उदार होने की नितान्त आवश्यकता है। स्वामी विवेकानन्द जी ने भी एक स्थान पर कहा है - "धार्मिक विचारों को विस्तृत, विश्वव्यापक और असीम होना ही पड़ेगा और तभी हम धर्म का पूर्ण रूप प्राप्त करेंगे, क्योंकि धर्म की शक्तियों की वास्तविक अभिव्यक्ति तो बस अब शुरु हुई है। लोग कहते हैं कि धर्म मर रहा है, आध्यात्मिकता का ह्रास हो रहा है; पर मुझे तो लगता है कि अभी-अभी ये पनपने लगे हैं एक सुसंस्कृत उदार धर्म की शक्ति अभी ही तो सम्पूर्ण मानव जीवन में प्रवेश करने जा रही है। जब हम सचमुच आध्यात्मिक और विश्वव्यापक धरातल पर आ जाएँगे, तब धर्म यथार्थ हो उठेगा, सजीव हो उठेगा, हमारे जीवन का अंग बन जाएगा, हमारी हर गति में रहेगा, समाज की पोर-पोर में भिद जाएगा, तब इसकी शिवात्मक शक्ति पहले की अपेक्षा अनन्त गुनी अधिक हो जाएगी।"

आज आवश्यकता इस बात की है कि सभी तरह के धर्म परस्पर बन्धुत्व का भाव रखें। बन्धुत्व की यह भावना पारस्परिक स्नेह और आदर पर आधारित होनी चाहिए। मानव मात्र के लिए स्नेह और दया ही सच्ची मार्मिकता की परख है।

हर धर्म का परम उद्देश्य यही है कि आत्मा में ही परमात्मा का दर्शन किया जाए, यही एकमात्र सार्वभौमिक धर्म है। अगर सभी धर्मों में कोई एक सार्वभौमिक सत्य है तो वह है - ईश्वर को पाना। आदर्श और साधन भिन्न-भिन्न हो सकते हैं पर मौलिक सत्य यही है - ईश्वर प्राप्ति जो हमारी इन्द्रियों की दुनिया से परे है। ईश्वर का दर्शन एक ऐसी चीज़ है जो पुस्तकों से परे है तथा संसार की विडम्बनाओं से परे है और ईश्वर को पाने का एक ही साधन है - तुम अपने भीतर का आध्यात्मिक प्रदीप जलाओ, पाप और अपवित्रता का तिमिर स्वयं भाग जाएगा। तुम अपनी आत्मा के उदात्त रूप का चिन्तन करो। तुम चाहे जो भी मार्ग अंगीकार करो, जिस किसी भी धर्मगुरू को मानो, पर इतना ध्यान रखो कि वह मार्ग तुम्हारे स्वभाव के अनुकूल हो क्योंकि तभी तुम्हारा विकास हो सकेगा। क्योंकि धर्म ही मानव-पशु को ईश्वर बना देता है। यदि मानव समाज से धर्म को निकाल दिया जाए तो पशुओं से भरे जंगल के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं रहेगा। आप सोचो, विश्लेषण करो और तब यदि निष्कर्ष तुम्हें बुद्धि संगत तथा सबके लिए हितकर लगे तो उसमें विश्वास करो और उसे अपने जीवन में ढाल लो।

- डॉ. सरिता नारंग

पूर्व प्राध्यापिका

आर्य कन्या महाविद्यालय,

शाहाबाद मारकण्डा, कुरूक्षेत्र

भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जयन्ती

भारत रत्न महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी के जन्म दिवस को श्री सप्त ऋषि आश्रम हरिद्वार में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर महामना मालवीय जी द्वारा स्थापित श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं उस के अन्तर्गत सनातन धर्म शिक्षा समिति द्वारा अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। 24 दिसम्बर 2017 को सायंकाल 6 बजे अन्तः सनातन धर्म विद्यालयी समूह देशभक्ति गान की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड के विभिन्न स.ध. विद्यालयों के प्रतियोगी दलों ने भाग लिया। 25 दिसम्बर को प्रातः 9 बजे हवन-यज्ञ के साथ कार्यक्रम आरम्भ हुआ। आश्रम में स्थापित महामना मालवीय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर माननीय श्री मदन कौशिक, शहरी विकास मन्त्री उत्तराखण्ड ने भी सक्रिय भूमिका निभाई तथा सप्तऋषि आश्रम के लिए पाँच लाख की राशि के अनुदान की घोषणा की। महन्त श्री देवानन्द जी सरस्वती जूना अखाड़ा ने भी अपना आशीर्वाद प्रदान किया। ग्यारह बजे आरम्भ हुए श्रद्धांजलि कार्यक्रम में 24 दिसम्बर को हुई देशभक्तिगान प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। इसी अवसर पर श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति के तत्त्वावधान में सनातन धर्म संस्थाओं के सर्वश्रेष्ठ अध्यापकों तथा छात्रों को सम्मानित किया गया। एस.एस.डी.गर्ल्ज कॉलेज बठिण्डा में एसो.प्रो. डॉ. नीरू गर्ग को प्रशस्ति पत्र तथा 11000/- रू. की राशि से, एस.डी. माडल सी.सै. स्कूल राजपुरा की वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती सुमन शर्मा को प्रशस्ति पत्र एवं 7500/- रू. की राशि से सम्मानित किया गया।

पंजाब स्कूल एजुकेशन बोर्ड से सम्बद्ध सनातन धर्म स्कूलों में दसवीं कक्षा में सर्वाधिक अंक (91%) पाने वाली एस.डी. मॉडल सी.सै. स्कूल, राजपुरा की छात्रा तृप्ता रानी को भी प्रशस्ति पत्र तथा 1100/- रू. की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया।

इसी अवसर पर समिति द्वारा आयोजित निबन्ध लेखन प्रतियोगिता के विजेता छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया। इसी अवसर पर द.एस.डी.विद्या स्कूल अम्बाला छावनी को विशेष पुरस्कार स.ध. शिक्षा समिति द्वारा आयोजित नैतिक एवं धार्मिक परीक्षा में सर्वाधिक संख्या में परीक्षार्थियों के लिए पुरस्कृत किया गया।

इस द्वि-दिवसीय कार्यक्रम में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश से आए 200 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। मुख्य रूप से श्री आई.एम. गोस्वामी कार्यकारी प्रधान, डॉ. देशबन्धु महासचिव तथा शिक्षा समिति के कार्यकारी प्रधान, गो. सरदारी लाल (महासचिव) श्री उपेन्द्र शर्मा (महासचिव), डी. आर.मदान (कार्यालय सचिव), डॉ.आर.पी.विज (आश्रम प्रशासक), डॉ. नन्दकिशोर (प्रचारमन्त्री), के.के. अग्रवाल (उप प्रधान), सुधीर गुप्ता (उप प्रधान), महन्त स्वरूप बिहारी शरण (प्रधान, स.ध. महावीर दल) स.ध. स्कूल कॉलेजों के अनेक प्राचार्य तथा अध्यापकों ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई।

समूह देशभक्ति गान प्रतियोगिता

प्रथम स्थान

(1) एस.डी. फुलरर्वान कन्या स्कूल, जालन्धर

(2) द एस.डी. विद्या पब्लिक स्कूल, अम्बाला छावनी

द्वितीय स्थान

(1) श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार

(2) एल.एस.डी.सी.सै. स्कूल, बस्सी दौलतखान

तृतीय स्थान

(1) एच.एस.डी.कन्या सी.सै. स्कूल, गुरदासपुर

(2) एस.डी.सी.सै. स्कूल, अम्बाला छावनी

सान्त्वना

(1) गोस्वामी गणेशदत्त एस.डी.सी. सै. स्कूल (हरियाणा) पंजाब

(2) एस.डी.इण्टर कॉलेज, खड़खड़ी

(3) मिथिलेश एस.डी.इंटर कॉलेज, कनखल

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

कनिष्ठ वर्ग

प्रथम स्थान

(1) प्रेरणा - एस.डी. फुलर्वान गर्ल्स सी.सै. स्कूल (जालन्धर)

द्वितीय स्थान

(1) दीपक-सनातन धर्म सी.सै. स्कूल, अम्बाला छावनी

(2) पलक-सनातन धर्म महावीर पब्लिक स्कूल, अमृतसर

तृतीय स्थान

(1) तरून-सनातन धर्म सी.सै. स्कूल, अम्बाला छावनी

(2) स्नेहा - एस.डी. माडल सी.सै. स्कूल, राजपुरा

वरिष्ठ वर्ग

प्रथम स्थान

(1) वन्दना-एस.डी.फुल्लर्वान गर्ल्स सी.सै. स्कूल (जालन्धर)

द्वितीय स्थान

(1) तृप्ता-एस.डी. मॉडल सी.सै. स्कूल, राजपुरा

(3) सहज - आसाराम सी.सै. पब्लिक स्कूल, अम्बाला छावनी

तृतीय स्थान

(1) मेघना मंगला द सनातन धर्म विद्या स्कूल, अम्बाला छावनी

(2) तमन्ना धारीवाल-आसाराम सी.सै. स्कूल, अम्बाला छावनी

पं. अमरनाथ शर्मा जी की पुण्य-तिथि दिनांक 17.2.2018 को सम्पन्न सामूहिक भजन-गायन प्रतियोगिता के परिणाम

प्रथम टीम	8	एस.डी. फुलर्वान गर्ल्स सी.सै. स्कूल (जालन्धर)
द्वितीय टीम	4	द एस.डी. विद्या स्कूल, अम्बाला
तृतीय टीम	6	एन.के.एस.डी. चाँद पब्लिक सी.सै. स्कूल, पालमपुर
सान्त्वना	7	पं. अमरनाथ एस.डी. पब्लिक स्कूल, बैजनाथ
		एन.के.एस.डी. पब्लिक स्कूल सिद्धपुर, सरकारी

ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त महाराज जी के स्त्री-शिक्षा पर विचार

आज से 62 वर्ष पूर्व जनवरी सन् 1956 में लायलपुर में सनातन धर्म कन्या पाठशाला की स्थापना पर बल होते हुए गोस्वामी जी ने स्त्री-शिक्षा पर निम्न शब्द कहे थे -

.... पुरुष अपनी अर्धांगिनी को शिक्षा से वंचित रखकर अपनी ही हानि कर रहा है। मनु ने भी कहा है - यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र देवा: रमन्ते। अर्थात् जहाँ नारियाँ शिक्षित और संस्कृत हैं वहाँ देवता रमण करते हैं, वहाँ लक्ष्मी खेलती है। अर्द्धनारीश्वर की भावना में पुरुष और स्त्री को एक दूसरे का पूरक माना गया है, एक की उन्नति दूसरे पर निर्भर है। स्त्री अपनी कोमलता एवं मिठास से पुरुष की प्रेरणाशक्ति बन जाती है। हिन्दू धर्म में स्त्री को शक्ति का अवतार माना गया है। सुशिक्षित स्त्री पुरुष की शक्ति है। शक्ति के बिना शिव भी शव ही है। प्राचीन भारत में गार्गी, लोपामुद्रा, सीता, सावित्री अपनी विद्या से पूज्य थीं। स्त्री समाज की मातृशक्ति है। यदि यह शक्ति शिथिल, निराश अथवा अशिक्षित होगी तो उसके हाथ में पलने वाला समाज भी निराश और शक्तिहीन होगा। स्त्री-समाज आज के युग की आवश्यकता है। यदि देश को ऊँचे उठाना है तो स्त्री-पुरुष दोनों ही सुशिक्षित होने चाहिएँ। स्त्री समाज का आधा शरीर है। यदि यह आधा शरीर अशिक्षित अस्वस्थ है तो समाज अधांग हो जायेगा। समाज-कल्याण के लिए हमारी कन्याओं का सुशिक्षित होना परमावश्यक है .....

(डॉ. आर.पी. विज)
प्रशासक
सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार

माता मन्दिर ओखला नई दिल्ली का वार्षिक सम्मेलन

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत माता मन्दिर ओखला इण्डस्ट्रीयल एरिया दिल्ली का वार्षिक उत्सव 3 फरवरी से 4 फरवरी 2018 तक धूमधाम से मनाया गया। तीन फरवरी को भव्य संकीर्तन का आयोजन किया एवं 4 फरवरी को विशाल हवन व माता की भेंटों का व्यापक आयोजन एवं विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। कई कीर्तन मण्डलियों द्वारा माता की भेंटें प्रस्तुत की गयी।

इस भव्य समारोह का आयोजन मन्दिर के चेयरमैन श्री रमेश आनन्द जी एवं समारोह का समापन सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यवाहक प्रधान श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी जी व कार्यालय मंत्री श्री डी.आर.मदान जी ने किया। श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी जी ने सभी अतिथियों व कीर्तन मण्डलियों का सफल आयोजन के लिए श्री रमेश आनन्द जी का धन्यवाद किया एवं कहा कि सभा को उम्मीद है कि मन्दिर भव्य रूप लेगा एवं मन्दिर का नव निर्माण शीघ्र ही पूरा होगा। श्री मदान जी ने सभी भक्तजनों से कहा कि आप हमें अपना पूर्ण सहयोग दें जिससे शीघ्र ही मन्दिर-निर्माण का कार्य पूरा हो सके एवं मूर्तियाँ स्थापित की जा सकें।

इन्द्रमोहन गोस्वामी
कार्यवाहक प्रधान

डी.आर. मदान
कार्यालय मंत्री

ਵਿਕਾਸਸ਼ੀਲ ਮਤੇ ਕੀਤੇ ਪਾਸ

ਆਮਦਨ ਤੇ ਖ਼ਰਚੇ ਦੇ ਪੇਸ਼ ਕੀਤੇ ਬਜਟਾਂ 'ਤੇ ਚਰਚਾ ਉਪਰੰਤ ਪ੍ਰਵਾਨਗੀ ਦਿੱਤੀ

ਨੀਰੂ ਸ਼ਰਮਾ, ਹਰਿਆਣਾ

ਮੀਟਿੰਗ ਦੌਰਾਨ ਵਿਚਾਰ ਵਟਾਂਦਰਾ ਕਰਦੀਆਂ ਸ਼ਖ਼ਸੀਅਤਾਂ।

कर्मभूमि में मनी महामना की जयंती

वित्त मंत्री पंत ने कहा-महामना के विचार आज भी प्रासंगिक, हरकी पैड़ी पर महारुद्राभिषेक

गंगा रक्षा की शपथ

इन्हें किया सम्मानित

ऋषिकुल में शोभायात्रा

ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਕਾਰਜਕਾਰਨੀ ਦੀ ਉੱਚ ਪੱਧਰੀ ਮੀਟਿੰਗ

ਸ੍ਰੀ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਪ੍ਰਤੀਨਿਧੀ ਸਭਾ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪ੍ਰਧਾਨ ਡਾ. ਸ਼ਿਵ ਕੁਮਾਰ ਸ਼ਰਮਾ ਦੀ ਪ੍ਰਧਾਨਗੀ ਹੇਠ ਹੋਈ ਮੀਟਿੰਗ ਦਾ ਦ੍ਰਿਸ਼।

महामना जयंती पर कैबिनेट मंत्री ने माल्यापर्ण कर दी श्रद्धांजलि

छाया शिवप्रकाश

हरिद्वार। प्रदेश के कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक जी ने सप्तऋषि आश्रम में भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जयंती पर आयोजित कार्यक्रम व अनुष्ठान में शामिल होते हुए मालवीय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर श्री कौशिक ने आश्रम प्रांगण में भोजनालय का शुभारम्भ किया और 5 लाख रूपये देने की घोषणा भी की। इस दौरान अपने संबोधन में कैबिनेट मंत्री ने मालवीय जी को स्मरण करते हुए कहा की महामना जी द्वारा सनातन धर्म की रक्षा के लिए किये गए योगदान को व धर्म नगरी में शिक्षा जगत में व सनातन संस्कृति के लिए किये गए कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकता। मदन कौशिक ने भोजनशाला का भी उद्घाटन भी किया। माँ गंगा के प्रति उनकी श्रद्धा भक्ति सर्व विदित है धर्म नगरी में उनके द्वारा स्थापित गंगा सभा इसका उदाहरण है। इस अवसर पर मेयर मनोज गर्ग, जुना अखाड़ा के मंत्री देवानंद सरस्वती, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष आई एम गोस्वामी, उपाध्यक्ष सुधीर गुप्ता, महंत स्वरूप कौशिक, महावीर दल के अध्यक्ष देश बंधु, महामंत्री उपेन्द्र, क्षेत्रीय पार्षद अनिल मिश्र आदि ने महामना जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। इससे पूर्व भारत के पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपयी के जन्म दिवस पर भाजपा के मंडल अध्यक्ष अनिरुद्ध भाटी द्वारा सचिदानंद घाट पर आयोजित रुद्राभिषेक में मन्त्री मदन कौशिक ने भाग लिया व गंगा जी में वाजपेयी जी की दीर्घायु के लिए दुग्धाभिषेक किया। इस अवसर पर विनीत जोली, गोमती मिश्र, नीरु चतुर्वेदी, संदीप गोस्वामी, आचार्य सुशील शर्मा, मैनेजर विनोद कुमार, सत्यप्रकाश सक्सैना आदि मौजूद रहे।'

महामना के विचारों को करें आत्मसात : रावत

जागरण संवाददाता, हरिद्वार: महामना सेवा संस्थान की ओर से सोमवार को ऋषिकुल आयुर्वेदिक कॉलेज ऑडिटोरियम में महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की 156वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। इस मौके पर समाज सेवा के लिए जिलाधिकारी दीपक रावत को मालवीय सम्मान से सम्मानित किया गया। इस दौरान अलग-अलग क्षेत्र की प्रतिभाओं का भी अभिनंदन किया गया।

मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री प्रकाश पंत ने महामना के जीवन से जुड़े संस्मरणों को सुनाते हुए उनके सिद्धांतों को आज भी प्रासंगिक बताया। डॉ. स्वामी श्याम सुंदर दास शास्त्री ने महामना के विचारों को अपनाने को कहा। कार्यक्रम में समाज सेवा के लिए डीएम दीपक रावत को मालवीय सम्मान से सम्मानित किया गया।

ऋषिकुल आयुर्वेदिक कॉलेज में मदन मोहन मालवीय के जन्मदिन पर छात्रा को सम्मानित करते डीएम दीपक रावत • जागरण

इसके अलावा गाजियाबाद स्थित महिला संस्थान की प्राचार्य डॉ. उपासना जोशी, डीपीएस दौलतपुर के संस्थापक उद्योगपति विकास गोयल, डीपीएस दौलतपुर की प्राचार्य उमा पांडेय, जगदंबा फार्मेसी के डॉ. अशोक पालीवाल और आयुर्वेद चिकित्सक डॉ. ज्ञानेंद्र पांडेय को मालवीय अभिनंदन दिया गया। 12 नवंबर को महामना की पुण्यतिथि पर संस्थान की ओर से भारत के अभ्युदय में महामना के योगदान विषय पर कराई गई भाषण प्रतियोगिता के विजेताओं को भी सम्मानित किया गया। डीपीएस की रूपसी प्रथम, सरस्वती विद्या मंदिर की श्वेता द्वितीय, डीएवी के शिवम तृतीय और इसी विद्यालय की नंदिनी मिश्रा को सांत्वना पुरस्कार दिया गया। समारोह को प्रो. डॉ. पीएस चौहान, स्वामी हरिहरानंद ने भी संबोधित किया।

इससे पूर्व कैबिनेट मंत्री प्रकाश पंत, संस्थान के अध्यक्ष डॉ. पद्म प्रकाश सुवेदी, महामंत्री डॉ. रमेशचंद्र, कोषाध्यक्ष गजेंद्र कौशिक, उपाध्यक्ष संजय अग्रवाल, पुष्पेंद्र जोशी, योगेश पांडेय ने दीप जलाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

समारोह में भाजपा नेता संजय बंसल, राजीव शर्मा, आचार्य करुणेश मिश्र, प्रेमचंद्र शास्त्री, प्रो ओमप्रकाश भट्ट, कमलापति त्रिपाठी, धमेंद्र चौहान, सतीश जी, रवि भारद्वाज, जगदीश लाल पाहवा, संजय बिष्ट आदि उपस्थित थे।

धर्म की रक्षा को मालवीय का योगदान अविस्मरणीय

जागरण संवाददाता, हरिद्वार: कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक ने सप्तऋषि आश्रम में भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जयंती पर आयोजित कार्यक्रम और अनुष्ठान में हिस्सा लिया। उन्होंने आश्रम परिसर में भोजनालय का शुभारंभ कर पांच लाख रुपये देने की घोषणा की।

शहरी विकास मंत्री मदन कौशिक ने कहा महामना ने सनातन धर्म की रक्षा के लिए अविस्मरणीय योगदान किया। मां गंगा के प्रति उनकी श्रद्धा भक्ति सर्व विदित है। धर्म नगरी में श्री गंगा सभा की स्थापना इसका उदाहरण है। महापौर मनोज गर्ग, जूना अखाड़ा के मंत्री देवानंद सरस्वती, सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के कार्यवाहक अध्यक्ष आइएम गोस्वामी, उपाध्यक्ष सुधीर गुप्ता, महंत स्वरुप कौशिक, महावीर दल के अध्यक्ष देश बंधु, महामंत्री उपेंद्र, क्षेत्रीय पार्षद अनिल मिश्र ने महामना मदन मोहन मालवीय को नमन किया। इसी क्रम में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिन पर मंडल अध्यक्ष अनिरुद्ध भाटी की ओर से सच्चिदानंद घाट पर रुद्राभिषेक में भी शहरी विकास मंत्री शामिल हुए। गंगा का दुग्धाभिषेक कर पूर्व प्रधानमंत्री के स्वस्थ व दीर्घायु होने की कामना की। इस अवसर पर विनीत जौली, गोमती मिश्र, नीरु चतुर्वेदी, संदीप गोस्वामी, आचार्य सुशील शर्मा आदि मौजूद रहे।

श्री सनातन धर्म सभा देशहित के लिए सदैव क्रियाशील : डा. शिव कुमार

हरियाना, 24 अप्रैल (आनंद): उत्तरी भारत की प्रसिद्ध श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष व पूर्व विधायक डा. शिव कुमार शर्मा की अध्यक्षता में कार्यकारिणी की उच्च स्तरीय बैठक का आयोजन जी.जी.डी.एस.डी. कालेज हरियाना में हुआ जिसमें दिल्ली, चंडीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड तथा राजस्थान से सभा के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में विभिन्न प्रस्ताव पास किए गए तथा नए प्रोजैक्टों को स्वीकृति प्रदान की गई।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की हुई बैठक दौरान सभा के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा व अन्य। (आनंद)

बैठक के प्रथम सत्र में सभा के महासचिव डा. देशबंधु द्वारा प्रस्तुत की गई गत बैठक की कार्रवाई पर समूह उपस्थिति ने संतुष्टि का इजहार किया तथा सभा के आय-व्यय के विवरण की रिपोर्ट पेश की। इसके उपरांत कार्यकारी अध्यक्ष आई.एम. गोस्वामी के नेतृत्व में गठित पांच सदस्यीय कमेटी द्वारा विभिन्न स्कूलों के किए गए निरीक्षण, बजट तथा भविष्य की योजनाओं की पेश की गई रिपोर्ट पर चर्चा करते हुए प्रिंसीपलों को स्कूलों की कारगुजारी में व्यापक स्तर पर सुधार लाने के आदेश दिए गए। इस मौके मान्यता व सहायता प्राप्त स्कूलों तथा कालेजों में अध्यापकों व अन्य कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति के कारण खाली हो रहे पदों तथा विद्यार्थियों की कम हो रही गिनती को लेकर गंभीर चिंता का इजहार किया गया तथा सभा की ओर से संचालित किए जा रहे मॉडल स्कूलों में व्यापक स्तर पर सुधार लाने पर बल दिया।

बैठक के दूसरे सत्र में सभा के मुख्य कार्यालय नई दिल्ली, सप्तऋषि आश्रम, गौशाला, कपूरथला हाऊस, महावीर दल धर्मशाला, श्री गीता मन्दिर, गोस्वामी गणेश दत्त भवन चंडीगढ़, गीताभवन गुरदासपुर, संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार आदि उपसमितियों ने भी बजट व रिपोर्ट पेश की जिन पर विचार-चर्चा करते हुए स्वीकृति प्रदान की गई। इनके अतिरिक कई अन्य प्रोजैक्टों को भी विस्तृत चर्चा करने उपरांत पास किया गया। सभा के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा ने कहा कि श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा अपने निर्धारित धार्मिक, शैक्षणिक व सामाजिक कार्यों के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ देशहित के लिए निरंतर यत्नशील तथा क्रियाशील रहेगी।

इस अवसर पर कार्यवाहक अध्यक्ष आई.एम. गोस्वामी, महंत स्वामी स्वरूप कौशिक, उपाध्यक्ष प्रि. गुरुदत्त शर्मा, वित्त महासचिव डा. आर.पी. विज, सरदारी लाल गोस्वामी, महासचिव डा. देशबंधु शर्मा, प्रि. विवेक शर्मा, प्रि.डा. गुरदीप शर्मा, वरिन्द्र कत्याल, मनिन्द्र शर्मा, श्याम सुन्दर शारदा, सुधीर गुप्ता, मदन लाल शर्मा, प्रो. के.के. हांडा, मोहन लाल पहलवान, डा. आर.पी. भारद्वाज, अशोक कुमार, प्रिं. नीरज सैनी, प्रि. नीलम रानी, प्रि. राजिन्द्र कुमार आदि उपस्थित थे।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा ने विभिन्न प्रस्ताव व प्रोजैक्टों को प्रदान की स्वीकृति

हरियाना, 25 अप्रैल (भारत भूषन शर्मा): उत्तरी भारत की प्रसिद्ध श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष व पूर्व विधायक डा. शिव कुमार शर्मा की अध्यक्षता में कार्यकारिणी की उच्च स्तरीय बैठक का आयोजन जी.जी.डी.एस.डी. कालेज हरियाना में हुआ जिसमें दिल्ली, चंडीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड तथा राजस्थान से सभा के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में विभिन्न प्रस्ताव पास किए गए तथा नए प्रोजैक्टों को स्वीकृति प्रदान की गई। कालेज प्रिंसीपल व सभा के आर्गेनाईजर डा. गुरदीप शर्मा ने सभा के समूह पदाधिकारियों का कालेज पहुंचने पर हार्दिक अभिनंदन किया। बैठक का शुभारंभ मंगलाचरण गीत के साथ हुआ। बैठक के प्रथम सत्र में सभा के महासचिव डा. देश बंधु द्वारा प्रस्तुत की गई गत बैठक की कार्रवाई पर समूह उपस्थिति ने संतुष्टी का इजहार किया तथा सभा के आय-व्यय के विवरण की रिपोर्ट पेश की। इसके उपरांत कार्यकारी अध्यक्ष आई. एम. गोस्वामी के नेतृत्व में गठित एक पांच सदस्यीय कमेटी द्वारा विभिन्न स्कूलों के किए गए निरीक्षण, बजट तथा भविष्य की योजनाओं की पेश की गई रिपोर्ट पर

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की हुई बैठक दौरान सभा के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा तथा अन्य।

चर्चा करते हुए प्रिंसीपलों को स्कूलों की कारगुजारी में और अधिक व्यापक स्तर पर सुधार लाने के आदेश दिए गए। इस मौके मान्यता एवं सहायता प्राप्त स्कूलों तथा कालेजों में अध्यापकों व अन्य कर्मचारियों के सेवा निवृति के कारण खाली हो रहे पदों तथा विद्यार्थियों की कम हो रही गिणती को लेकर गंभीर चिंता का इजहार किया गया तथा सभा की ओर से संचालित किए जा रहे माडल स्कूलों में व्यापक स्तर पर सुधार लाने पर बल दिया। बैठक के दूसरे सत्र में सभा के मुख्य कार्यालय नई दिल्ली, सप्तऋषि आश्रम, गौशाला, कपूरथला हाउस, महावीर दल धर्मशाला, श्री गीता मन्दिर, गौ स्वामी गणेश दत्त भवन चंडीगढ़, गीता भवन गुरदासपुर, संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार, आदि उप समितियों ने भी बजट एवं रिपोर्ट पेश की जिन पर विचार चर्चा करते हुए स्वीकृति प्रदान की गई। इनके अतिरिक्त कई अन्य प्रोजैक्टों पर भी विस्तृत चर्चा करने उपरांत पास किया गया। सभा के अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा ने समूह पदाधिकारियों व सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा अपने निर्धारित धार्मिक, शैक्षणिक एवं समाजिक कार्यों के प्रचार एवं प्रसार के साथ साथ देश हित के लिए निरन्तर यत्नशील तथा क्रियाशील रहेगी। इस अवसर पर कार्यवाहक अध्यक्ष आई. एम. गोस्वामी, महंत स्वामी स्वरूप कौशिक, उपाध्यक्ष प्रिं. गुरु दत्त शर्मा, वित्त महासचिव डा. आर. पी. विज, सरदारी लाल गोस्वामी, महासचिव डा. देश बंधु शर्मा, प्रिं. विवेक शर्मा, प्रिं. डा. गुरदीप शर्मा, वरिन्द्र कत्याल, मनिन्द्र शर्मा, श्याम सुन्दर शारदा, सुधीर गुप्ता, मदन लाल शर्मा, प्रो. के. के. हांडा, मोहन लाल पहलवान, डा. आर. पी. भरद्वाज, अशोक कुमार, प्रिं. नीरज सैनी, प्रिं. नीलम रानी, प्रिं. रजिन्द्र कुमार तथा कई उपस्थित थे।

श्री सनातम धर्म प्रतिनिधि सभा ने प्रोजेक्टों पर की चर्चा

संवाद सहयोगी, हरियाना : श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष एवं पूर्व विधायक डॉ. शिव कुमार शर्मा की अध्यक्षता में कार्यकारिणी की उच्च स्तरीय बैठक जीजीडी एसडी कॉलेज हरियाना में हुई। इसमें दिल्ली, चंडीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उतराखंड तथा राजस्थान से सभा के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों ने भाग लिया। इस दौरान विभिन्न प्रस्तावों को पास करने सहित नए प्रोजेक्टों को स्वीकृति प्रदान की गई। इस अवसर पर कॉलेज प्रिंसिपल व सभा के आर्गनाइजर डॉ. गुरदीप शर्मा ने सभा के समूह पदाधिकारियों का अभिनंदन किया।

एसडी कॉलेज हरियाना में सेमिनार के दौरान जानकारी देते माहिर • जागरण

बैठक के प्रथम सत्र में सभा के महासचिव डॉ. देश बंधु द्वारा सभा के आय-व्यय की रिपोर्ट पेश की गई। इसके बाद कार्यकारी अध्यक्ष आइएम गोस्वामी के नेतृत्व में गठित एक पांच सदस्यीय कमेटी ने विभिन्न स्कूलों के किए गए निरीक्षण, बजट तथा भविष्य की योजनाओं की पेश की। इस पर चर्चा करते हुए प्रिंसिपलों को स्कूलों की कारगुजारी में और अधिक व्यापक स्तर पर सुधार लाने के आदेश दिए गए।

इस मौके पर मान्यता एवं सहायता प्राप्त स्कूलों एवं कॉलेजों में अध्यापकों व अन्य कर्मचारियों के सेवानिवृत्ति के कारण खाली हो रहे पदों तथा विद्यार्थियों की कम हो रही संख्या को लेकर गंभीर चिंता भी जताई गई। बैठक के दूसरे सत्र में सभा के मुख्य कार्यालय नई दिल्ली, सप्तऋषि आश्रम, गोशाला, कपूरथला हाउस, महावीर दल धर्मशाला, श्री गीता मंदिर, गो स्वामी गणेश दत्त भवन चंडीगढ़, गीता भवन गुरदासपुर, संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार आदि की उप समितियों ने भी बजट एवं रिपोर्ट पेश की।

सभा के अध्यक्ष डॉ. शिव कुमार शर्मा ने उपस्थिति का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा अपने निर्धारित धार्मिक, शैक्षणिक एवं समाजिक कार्यों के प्रचार एवं प्रसार सहित देश हित के लिए निरंतर यत्नशील तथा क्रियाशील रहेगी।

इस अवसर पर कार्यवाहक अध्यक्ष आइएम गोस्वामी, महंत स्वामी स्वरुप कौशिक, उपाध्यक्ष प्रिंसिपल गुरु दत्त शर्मा, वित्त महासचिव डॉ. आरपी विज, सरदारी लाल गोस्वामी, महासचिव डॉ. देशबंधु शर्मा, प्रिं. विवेक शर्मा, प्रिं. डॉ. गुरदीप शर्मा, वरिंद्र कत्याल, मनिंद्र शर्मा, श्याम सुंदर शारदा, सुधीर गुप्ता,

मदन लाल शर्मा, प्रो. केके हांडा, मोहन लाल पहलवान, डॉ. आरपी भारद्वाज, अशोक कुमार, प्रिं. नीरज सैनी, प्रिं. नीलम रानी, प्रिं. रजिंद्र कुमार तथा कई उपस्थित थे।

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) नई दिल्ली से सम्बन्धित संस्थाओं में हुए नवीनीकरण एवं संवर्द्धन कार्य

1. **भूपेन्द्र भवन, पहाड़गंज, नई दिल्ली**

– वर्षों पुराने भूपेन्द्र भवन का नवीनीकरण एवं जीर्णोद्धार कार्य प्रगति पर है।

– 3 कमरों में ए.सी. लगवा दिये गये हैं। सभी कमरों में जाली के दरवाजे लगा दिये गये हैं।

– सभी कमरों में संलग्न सुविधा कक्ष उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।

2. **सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार**

– स्वामी रामतीर्थ सत्संग हाल की छत की मरम्मत के उपरान्त सत्संग हाल के बरामदे में नया जनसुविधा प्रकोष्ठ बनाने का कार्य प्रगति पर है।

– दानियों की आर्थिक सहायता से कई कुटियाओं का सुधार हो चुका है व शेष कुटियाओं के लिए अन्य दानियों से भी सम्पर्क किया जा रहा है।

– दानियों की ही आर्थिक सहायता से यात्रियों के लिए कुछ और कुटियायें/कमरे बनाने की योजना है।

– 11 कुटियाओं में ए.सी. लग चुके हैं और यदि कोई दानी किसी कुटिया में ए.सी. लगवाना चाहता है तो आश्रम के कार्यालय से सम्पर्क करे।

– आश्रम के प्रांगण को नये गमलों व फूल पौधों से सजाया जा रहा है।

– गोस्वामी गणेश दत्त घाट के परिसर के सौंदर्यीकरण का कार्य हो रहा है। घाट पर एक अच्छा जन–सुविधा प्रकोष्ठ बनवाने की योजना स्वीकृत हो चुकी है।

– संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य जी के आग्रह पर कम्प्यूटर रूम के साथ जनसुविधा प्रकोष्ठ बनाने की योजना है।

– नये भोजनालय व नये रसोईघर का कार्य पूरा हो चुका है। पुराने भोजनालय व रसोईघर का जीर्णोद्धार कार्य आदरणीय अंजना दीदी के सहयोग से हो रहा है।

3. **गोस्वामी गणेशदत्त भवन, चण्डीगढ़**

– पूरे भवन के जीर्णोद्धार के उपरान्त कार्यालय एवं तीन रिहायशी कमरों में **False Ceiling** करवा कर उन सभी को ए.सी. युक्त कर दिया गया है।

– सभी बरामदों में POP करवा कर पेण्ट इत्यादि का कार्य पूर्ण हो चुका है।

– जनसुविधा प्रकोष्ठ को दुबारा से बनवाया गया है।

– CCTV कैमरे लगवाये जा रहे हैं।

इन सभी स्थानों पर सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) से सम्बन्धित सभी संस्थाओं के सदस्यों के ठहरने का नियमानुसार उचित प्रबन्ध है। निवेदन केवल यह है कि अपने साथ अपना पहचान–पत्र अवश्य रखे तथा सरकार के आदेशानुसार इसकी एक प्रति कार्यालय में अवश्य दें। इन भवनों के रख–रखाव हेतु सभा द्वारा निश्चित राशि सहयोग हेतु कार्यालय में अवश्य जमा करवायें। आपकी सभा या शैक्षणिक संस्थाओं के किन्हीं सदस्यों/विद्यार्थियों या अध्यापकों को अगर इन स्थानों पर रहना है तो किसी पदाधिकारी/प्राचार्य का पत्र जरुर साथ लायें।

4. ओखला माता मन्दिर, दिल्ली

कुछ कारणों से मन्दिर निर्माण कार्य पिछले कुछ समय से रुका हुआ था। यह कार्य पुनः आरम्भ कर दिया गया है और आशा है आने वाले छः महीनों में यह कार्य पूर्ण हो जायेगा।

THE TRIBUNE 21-5-2018

₹2 cr to renovate Krishna temple in Pak

Islamabad: Pakistan's Punjab province government has released ₹2 crore to renovate a Krishna temple in Rawalpindi and expand it to accommodate more Hindu worshippers on religious occasions, a report said. Krishna temple is the only functioning Hindu temple in the twin cities of Rawalpindi and Islamabad. The small temple was built by Kanji Mal and Ujagar Mal Ram Rachpal in 1897. PTI

DAINIK JAGRAN 21-5-2018

पाक पंजाब सरकार ने कृष्ण मंदिर को दिए दो करोड़ रुपये

इस्लामाबाद : रावलपिंडी स्थित कृष्ण मंदिर के नवीनीकरण के लिए पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की सरकार ने दो करोड़ रुपये जारी किए हैं। यह राशि मंदिर की मरम्मत के अलावा उसके विस्तारीकरण पर भी खर्च होगी। मंदिर का विस्तार इसलिए किया जा रहा है ताकि हिंदुओं के त्योहार के मौकों पर यहां ज्यादा से ज्यादा भक्त जुट सकें। रावलपिंडी और इस्लामाबाद में यह एकमात्र मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण 1897 में कांजी मल और उजगर मल राम रछपाल ने करवाया था। (प्रेट्र)

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) नई दिल्ली की तरफ से पंजाब प्रांत पाकिस्तान सरकार का हार्दिक धन्यवाद!

S.D. Phullarwan Girls Sr.Sec.School

New Railway Colony, Jalandhar City

Board Result of Sr. Sec. Examination (2017-18)

(Humanities Group - 98%)

SAREEN
(88.66%)

DEEKSHA
(88%)

MUKTI SOOD
(87.77%)

(Commerce Group - 100%)

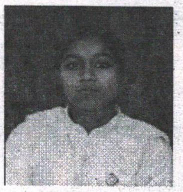

SNEHA
(85.33%)

TANIA
(82.83%)

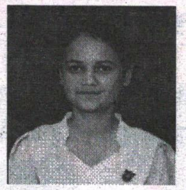

MANSI
(79.77%)

(Science Group - 73%)

BHANUPRIYA
(70%)

PRIYA
(60%)

Board Result of Matriculation Examination (2017-18)

VANDANA
(92.15%)

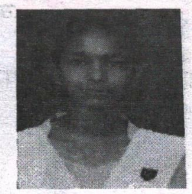

NEHA
(92%)

GEETIKA
(89%)

डॉ. नन्द किशोर शर्मा, प्रधान संपादक
10, अशोक विहार, महेश नगर
अम्बाला छावनी - 133001
मो. 9896589890, 8708534636

डॉ. देशबन्धु,
1117, प्रभु प्रेमपुरम, जगाधरी रोड़,
अम्बाला छावनी - 133001
मो. 9812053283

सदस्यता सहयोग प्रपत्र

मैं/हमारी संस्था ....

स्थायी पता ....

....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) द्वारा प्रकाशित की जा रही "सनातन संवर्धिनी" नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए 100/- रू. (एक सौ रुपये केवल) की सहयोग राशि प्रतिवर्ष प्रदान करने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ।

मैं/हमारी संस्था यह राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति (पंजी.) के नाम प्रेषित कर रहा हूँ/रही है।

हस्ताक्षर ....

नाम ....

पद ....

<u>गौशाला हेतु दान संकल्प</u>

मैं ....

स्थायी पता ....

....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) द्वारा सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में संचालित गौशाला के लिए रुपये .... (शब्दों में) .... की दानराशि प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ। मैं यह राशि सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार के नाम नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा प्रदान कर रहा हूँ/रही हूँ।

हस्ताक्षर

पंडित अमर नाथ शर्मा जी की पुण्य तिथि दिनांक 17-2-2018 को पालमपुर में आयोजित श्रद्धांजलि समारोह की झलकियां

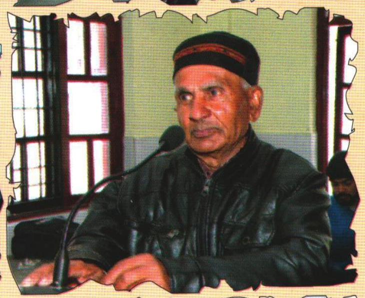

भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की जयन्ती दिनांक 25-12-2017 को
सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार में आयोजित समारोह की झलकियां